Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-169-175

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 169-175
DOI :-10.71037/gyanvividha.v3i2.27
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. सुनिता पलसानियाँ

शोधार्थी, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

2. डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत

सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

Corresponding Author :

सुनिता पलसानियाँ

शोधार्थी, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय,

वाल्मीकि रामायण में निहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विवेचन

सारांश : रामायण महाकाव्य भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भों में से एक एवं काव्य परम्परा में आदिकाव्य के रूप में प्रतिष्ठित है। यह ग्रंथ भारत की राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना का निर्विकल्प आश्रय है, जिसके गहन अध्ययन से ईश्वर के प्रति श्रद्धा, प्रेम और भक्ति का उदय होता है तथा अंतःकरण की शुद्धि होती है। वाल्मीकिकृत रामायण को समाज का पथ-प्रदर्शक, लोकजीवन का काव्य और एक समतामूलक समाज का आदर्शमय स्वरूप प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ बताया गया है। यह भारतीय समाज के आचार-विचार, सभ्यता, संस्कृति, धर्म-दर्शन, रीति-नीति एवं लोकजीवन का सर्वांगीण आदर्श प्रस्तुत करता है। रामायण का अध्ययन केवल प्राचीन भारतीय समाज में ही नहीं, अपितु स्थायी मानवीय मूल्यों और समकालीन जीवन में उनके अनुप्रयोग में भी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे यह चरित्र विकास और सांस्कृतिक समझ के लिए एक मूल्यवान संसाधन बन जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य रामायण में निहित सामाजिक संरचनाओं, मूल्यों, सांस्कृतिक प्रथाओं, जीवनदर्शन, सुशासन सम्बन्धी आचारमीमांसा का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उसकी वर्तमान समय में उपादेयता प्रस्तुत करना है।

पारिभाषिक शब्द : रामायण, समाज, संस्कृति, वर्ण-व्यवस्था, शासन-प्रणाली।

1. रामायणकालीन सामाजिक संरचना एवं मूल्य : रामायण सांसारिक प्राणियों के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विभिन्न अंगों के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। यह भारतीय कौटुम्बिक जीवन की कोमल भावनाओं और आदर्शों का चित्रण करती है।

2. पारिवारिक संबंध और आदर्श : रामायण में पारिवारिक संबंधों और आदर्शों का विस्तृत चित्रण मिलता है। भगवान राम को आज्ञाकारी पुत्र और पत्नीव्रता के रूप में चित्रित किया गया है। पिता दशरथ द्वारा दिए

गए वचन का पालन करने हेतु राम स्वेच्छा से 14 वर्ष का वनवास स्वीकार करते हैं, जो उनके कर्तव्यपरायणता और सत्यनिष्ठा का अद्वितीय उदाहरण है। राम कहते हैं,चाहे चन्द्रमा से उसकी प्रतिमा अलग हो जाए हिमालय अपनी शीतलता छोड दे अथवा समुद्र अपनी सीमा लांघकर आगे बढ जाए किन्तु मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा को नहीं तोड सकता - **लक्ष्मीः चन्द्रात् अपेयाद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत्।**

अतीयात् सागरो वेलां न प्रतिज्ञामहं पितुः ।।[1]

यह व्यक्तिगत कर्तव्य और पारिवारिक सामंजस्य के अंतर्संबंध को दर्शाता है। पितृ आज्ञापालन और गुरुजनों के प्रति सम्मान, जैसा कि **"तस्मात् पितृ वचः कार्य न विचार्ये कदाचन्"**[2] श्लोक में कहा गया है, व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक स्थिरता के लिए मूलभूत माना जाता था। इस श्लोक का अर्थ है कि पिता की आज्ञा का पालन बिना उसके औचित्य-अनौचित्य का विचार किए करना चाहिए। इसी प्रकार, **"माता-पिता गुरुश्चैव पूजनीया सदा नृणाम्। क्रिया तस्याफलाःसर्वाः ये ते अनादृतास्त्रयः।।"** श्लोक यह स्थापित करता है कि इन पूजनीय व्यक्तियों का अनादर करने से सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। राम के कार्य, हालांकि व्यक्तिगत रूप से महंगे थे, वचन-पालन के सामाजिक मूल्य को सुदृढ़ करते हैं, जो परिवार के भीतर और विस्तार से, समाज में विश्वास और व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि व्यक्तिगत नैतिक विकल्प, विशेष रूप से परिवार के भीतर, व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक स्थिरता के लिए मौलिक माने जाते थे।

शिक्षा को पारिवारिक और सामाजिक कल्याण की आधारशिला के रुप में देखा जाता था, जैसा कि **"माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः। न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥"** श्लोक में स्पष्ट है। इस श्लोक का अर्थ है कि जो माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं, वे उनके शत्रु के समान हैं। ऐसा अनपढ़ बच्चा विद्वानों की सभा में उसी प्रकार शोभा नहीं पाता, जैसे हंसों के बीच एक बगुला। यह व्यक्तिगत शैक्षिक उपलब्धि को सीधे सामाजिक स्थिति और उपयोगिता से जोड़ता है, जिससे यह केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि एक सामूहिक पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारी बन जाती है। यह शैक्षिक उपेक्षा के दीर्घकालिक सामाजिक परिणामों को भी रेखांकित करता है।

3. सामाजिक न्याय, समानता और समरसता : रामायण को समाज का पथ-प्रदर्शक माना जाता है, जो एक समतामूलक समाज का आदर्शमय स्वरुप प्रस्तुत करती है। इसमें सामाजिक न्याय तथा समानता का यथार्थ चित्रण मिलता है। रामराज्य की अवधारणा एक आदर्श समतामूलक समाज की परिकल्पना थी। रामराज्य में कोई विधवा रुदन नहीं करती थी, किसी को चोरी या लूट का भय नहीं था, अल्पमृत्यु नहीं होती थी, और लोग निरोग व दीर्घायु जीवन व्यतीत करते थे। सभी नागरिक धर्मपरायण थे, कोई दरिद्र, दुखी, दीन या मंदबुद्धि नहीं था; सभी गुणवान और सुलक्षणों से युक्त होते थे। रामराज्य को एक आदर्शवादी परिकल्पना और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के रूप में देखा जा सकता है। **"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**

देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥[3]

अर्थात् साथ चलें, साथ बोलें, अपने मनों को साथ जानें। और

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ।।"[4]

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी शुभ देखें, कोई भी दुखी न हो। जैसे श्लोक रामराज्य के सार्वभौमिक कल्याण और समता के भाव को व्यक्त करते है।

4. वर्ण व्यवस्था और सामाजिक भूमिकाएँ : रामायणकालीन समाज में आश्रम व्यवस्था तथा वर्णव्यवस्था युक्त समाज का वर्णन मिलता है। वर्ण विभाजन के आधार गुण, कर्म और उत्पत्ति माने गए हैं। ऋग्वेद और मनुस्मृति में चारों

वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की उत्पत्ति विराट पुरुष के मुख, बाहु, उरु और पैरों से बताई गई है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृत।
उरु तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत।।[5]

अर्थात् उस विराट पुरुष का मुख ब्राह्मण था, बाहु क्षत्रिय बने, उसकी जंघाएं वैश्य बने और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः ।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत् ।।[6]

अर्थात् समाज की वृद्धि के उद्देश्य से ब्रह्म ने मुख, बाहुओं, जंघाओं और पैरों से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र का निर्माण किया।

श्रीमद् भगवद्गीता में भी चारों वर्णों की सृष्टि गुण और कर्म के विभाग के आधार पर बताई गई है, न कि जन्म के आधार पर- **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।**
तस्यकर्तारमपि मां विद्ध यकर्त्तारमव्ययम्।।[7]

अर्थात् चारों वर्णों की सृष्टि मेरे द्वारा गुण और कर्म के विभाग के अनुसार की गई है। मुझे उसका कर्ता होने पर भी अकर्ता और अव्यय जानना।

तव सन्दर्शनं राम गुरुणामपि मे न हि।
योषिन्मूढाप्रमेयात्मन् हीनजातिसमुद्भवा ॥[8]

हे राम ! आपका दर्शन तो मेरे गुरुदेवको भी नहीं हुआ। फिर हे अप्रमेयात्मन्। मैं तो नीच जाति में उत्पन्न हुई एक गँवारी नारी ही हूँ। शबरी के जूठे बेर राम ने प्रेमपूर्वक स्वीकार किए, जो जाति और सामाजिक स्थिति से परे प्रेम और समानता को दर्शाता है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि यह आदर्श केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि सामाजिक सद्भाव के व्यावहारिक अनुप्रयोग को भी प्रदर्शित करता था, जो प्रेम और साझा मानवता के माध्यम से कठोर जाति या सामाजिक स्थिति को पार करता था।

शंबूक वध प्रसंग : रामराज्य स्थापित होने के बाद, एक ब्राह्मणपुत्र की अकाल मृत्यु होती है। देवर्षि नारद इसका कारण किसी शूद्र द्वारा ऋषिकर्म (तपस्या) अपनाने को बताते हैं। राम, दंडकारण्य में एक पेड़ पर उलटा लटक कर तपस्या कर रहे शंबूक नामक शूद्र से उसका नाम और उद्देश्य पूछते हैं। जब शंबूक सशरीर देवत्व प्राप्त करने की इच्छा बताता है, तो राम बिना एक भी शब्द बोले तलवार से उसका सिर काट देते हैं ।

शूद्रयोन्यां प्रसूतोऽस्मि शम्बूको नाम नामतः ।
देवत्वं प्रार्थये राम सशरीरो महायशः ।।[9]

मैं शूद्रयोनि में पैदा हुआ हूं, शंबूक मेरा नाम है। हे महायशस्वी राम, मैं सशरीर देवत्व के लिए प्रार्थना कर रहा हूं।

शूद्रं मां विद्धि काकुत्स्थ तप उग्रं समास्थितः।।
भाषातस्तस्य शूद्रस्य खड्गं सुरुचिराप्रभम् ।
निश्कृष्य कोषादविमलं शिरश्चिच्छेद राघवः।।[10]

मुझे शूद्र ही समझो, हे काकुत्स्थ, मैं उग्र तप में जुटा हूं। उस शूद्र के इतना कहते ही राघव ने अपनी विमल म्यान से सुंदर चमचमाता हुआ खड्ग निकाला और उसका सिर काट लिया।

रामायण काल में वर्ण व्यवस्था एक स्थिर, समान रुप से लागू अवधारणा नहीं थी। यह एक अधिक लचीली, योग्यता-आधारित प्रणाली से एक कठोर, जन्म-आधारित पदानुक्रम में विकास का संकेत दे सकता है, या स्वयं पाठ के भीतर विभिन्न दार्शनिक विचारों और प्रक्षेपों को प्रतिबिंबित कर सकता है।

5. शासन प्रणाली, राजा और प्रजा के कर्तव्य : रामायणकालीन शासन का स्वरुप राजतंत्रीय था, जहाँ राजा राज्य

का मुखिया होता था। राजा का मुख्य उद्देश्य अपने कर्तव्यों का पालन करना, लोगों की समृद्धि और खुशी को बढ़ावा देना, नैतिकता को प्रोत्साहित करना और उनके हितों की रक्षा करना था। राजा प्रजा के कल्याण का ध्यान रखता था । वाल्मीकि रामायण में राजा को ईश्वर का अंश बताया गया है। श्रीराम को ईश्वर के अवतार और धर्म के प्रतीक के रूप में वर्णित किया गया है, जो सत्य, न्याय और जिम्मेदारी का पालन करते हैं।

नैव लोभान्न मोहाद् वा न चाज्ञानात् तमोऽन्वितः।
सेतुं सत्यस्य भेत्स्यामि गुरोः सत्य प्रतिश्रवः।।[11]

पहले सत्यपालन कि प्रतिज्ञा करके अब लोभ, मोह अथवा अज्ञान से विवेक शून्य होकर मैं पिता के सत्य की मर्यादा भंग नही करुगा। एक आदर्श राजा गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, अनुग्रही, सत्यवक्ता, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचारी, जितेंद्रिय और अजेय योद्धा होना चाहिए। यहां नायक श्रीराम का उदात्त सत्चरित्र सभी के लिए अनुकरणीय है, यथा-

उत्साहः पौरुषं सत्त्वमानृशंस्यं कृतज्ञता ।
विक्रमाश्च प्रभावश्च सन्ति वानर राघवे ।।[12]

"हे वानर! राम दृढ़ता, पुरुषत्व, पराक्रम, दयालुता, कृतज्ञता, योग्यता और शक्ति से संपन्न हैं। राजा प्रजा के सुख में सुखी और दुख में दुखी हो, तथा प्रजा को अपने प्राणों के समान प्रिय माने। रामचरित मानस में राम को न्यायप्रिय और सर्वगुण सम्पन्न राजा बताया गया है, जो प्रजा को पुत्रवत स्नेह करते हैं। उनके लिए राजधर्म सर्वोपरि था, भले ही इसके लिए परिवार को कभी-कभी उपेक्षित करना पड़े ।

शासन में धर्म की दोहरी प्रकृति, आदर्शवाद बनाम व्यावहारिकता, स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती है। जहाँ रामराज्य को शांति, न्याय और समृद्धि के एक आदर्श राज्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, वहीं मनुस्मृति के श्लोक दंड की आवश्यकता पर दृढ़ता से जोर देते हैं ताकि अराजकता को रोका जा सके और सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके-

यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं दण्ड्येष्वतन्द्रितः ।
शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः ॥[13]

यदि राजा दंडित किए जाने योग्य दुर्जनों के ऊपर दंड का प्रयोग नहीं करता है, तो बलशाली व्यक्ति दुर्बल लोगों को वैसे ही पकाएंगे जैसे शूल अथवा सींक की मदद से मछली पकाई जाती है।

सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः ।
दण्डस्य हि भयात्सर्वं जगद्भोगाय कल्पते ॥[14]

यह संसार दंड के द्वारा ही जीते जाने योग्य है, अर्थात् दंड के द्वारा ही इसे नियंत्रण में रखा जा सकता है। ऐसा व्यक्ति दुर्लभ है जो स्वभाव से ही साफ-सुथरा एवं सच्चरित्र हो, न कि दंड के भय से। दंड के भय से ही वह व्यवस्था बन पाती है जिसमें लोग अपनी संपदा का भोग कर पाते हैं।

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा ।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति ॥[15]

जहाँ श्याम वर्ण एवं लाल नेत्रों वाला और पापों (पापियों) का नाश करने वाला 'दंड' विचरण करता है, और जहाँ शासन का निर्वाह करने वाला उचितानुचित का विचार कर दंड देता है वहाँ प्रजा उद्विग्न या व्याकुल नहीं होती।

6. रामायणकालीन सांस्कृतिक प्रथाएँ एवं विश्वास : रामायण में प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्पंदन महसूस होता है। यह आर्य संस्कृति की आधारशिला रही है और भारत के लोक जीवन में सत्य, स्वस्ति, शांति, तप, त्याग, सर्वभूतहित एवं लोकमंगल जैसे शाश्वत मूल्य समाहित हैं ।

7. नारियों की स्थिति और सम्मान : रामायण में नारियों के प्रति सम्मान की पराकाष्ठा दिखाई देती है। कौशल्या, सीता, अनसूया आदि के उदात्त एवं पवित्र चरित्रों को आज की नारी के लिए आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जटायु नामक पक्षी भी स्त्री का अपमान होते नहीं देख सकता था, जिसने अपने प्राणों की चिंता किए बिना परम शक्तिशाली रावण से युद्ध किया, जो स्त्री सम्मान की रक्षा के महत्व को दर्शाता है। तत्कालीन समाज में स्त्रियाँ विद्याध्ययन करती थीं, सैन्य शिक्षा प्राप्त करती थीं और धार्मिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। कन्या के जन्म पर माता-पिता हर्ष का अनुभव करते थे, जो समाज में उनकी स्वीकार्यता और महत्व को दर्शाता है। कुल मिलाकर, रामायण काल में स्त्रियों की दशा अच्छी थी।

8. नैतिक संहिताएँ और धर्म की अवधारणा : रामायण नैतिकता, मानवीय स्वभाव और अच्छे-बुरे के बीच संघर्ष की गहराई से पड़ताल करती है। यह नैतिक व्यवहार और सामाजिक सद्भाव को आकार देने वाला एक महत्वपूर्ण नैतिक मार्गदर्शक है-

एवं गुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः।
तस्य सिध्यन्ति सर्वाऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः ।।[16]

इन उद्धरणों से यह पता चलता है कि किसी भी राजा, प्रशासक अथवा निगम के प्रबंधक में अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के गुण दोषों, क्षमताओं को पहचानकर उनका सर्वोत्तम उपयोग करने की कुशलता आनी चाहिए। इसी गुण के चलते राम प्रोत्साहन से ही नेतृत्व निर्माण भी करते हैं।

धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं: - **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।**
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।[17]

धैर्य, क्षमा, आत्म-नियंत्रण, चोरी न करना, शरीर और मन की पवित्रता, इंद्रियों को वश में रखना, ज्ञान, विवेक, सत्य और क्रोधहीनता - ये दस धर्म के लक्षण हैं। स्वधर्म के पालन पर भी जोर दिया गया है: -

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह।।[18]

अच्छी तरह से अनुष्ठित परधर्म की अपेक्षा अपना विगुण (कम गुण वाला) स्वधर्म श्रेष्ठ है। स्वधर्म का पालन करते हुए मरना कल्याणकारी है, जबकि परधर्म भयावह होता है।

रामायण में सत्य एक मूलभूत गुण है। राजा दशरथ और भगवान राम दोनों अपने वचन के प्रति अत्यंत समर्पित थे, जो सत्यनिष्ठा का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। महर्षि वाल्मीकि के हृदय परिवर्तन का कारण क्रौंच पक्षी के वध पर उनकी गहन करुणा थी, जिससे रामायण जैसे महाकाव्य का जन्म हुआ। उनका प्रथम श्लोक इस प्रकार है: -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥[19]

हे निषाद, तुम्हें कभी भी चिरस्थायी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि तुमने बिना किसी अपराध के इस खेल में लगे हुए क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से एक को (जो काम से मोहित था) मार डाला।

एक कुशल नेतृत्वकर्त्ता में यह गुण अवश्य होना चहिए कि वह विकल्प के तौर पर अच्छे नेतृत्वकर्ता तैयार कर सके। राम में यह गुण है कि वह सबकी क्षमता को पहचानकर तदनुरुप कुशल नेतृत्वकर्ता तैयार करने में सफल प्रतीत होते हैं -

आगता त्वामियं युद्धिः स्वजा वाणिकी च या ।
भृषमुत्सहसे तत् रक्षितं पृथिवीमपि ॥[20]

हनुमान, जटायु, भरत, विभीषण, नल-नील और एक छोटी गिलहरी जैसे पात्र निस्वार्थ सेवा और समर्पण के प्रतीक हैं, जो सामूहिक कल्याण के लिए व्यक्तिगत योगदान के महत्व को दर्शाते हैं।

9. निष्कर्ष : पारिवारिक संबंधों में, रामायण पुत्र-धर्म, पितृ-आज्ञापालन, भ्रातृ-प्रेम और पति-पत्नी के आदर्शों के माध्यम से व्यक्तिगत कर्तव्य और पारिवारिक सामंजस्य के अंतर्संबंध को स्पष्ट करती है। रामायण धर्म को एक व्यापक जीवन-ढांचे के रूप में प्रस्तुत करती है, जो केवल धार्मिकता से परे एक लौकिक और नैतिक व्यवस्था को

समाहित करती है। सत्य, करुणा, सेवा, विनम्रता और क्षमा जैसे मानवीय मूल्य व्यक्तिगत और सामूहिक आचरण के लिए कालातीत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। संक्षेप में कहे तो रामायण एक विलक्षण और चिरंजीवी ग्रंथ है जो प्राचीन भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों, आदर्शों और प्रथाओं का एक समृद्ध भंडार है। इसके गहरे नैतिक और दार्शनिक सिद्धांत, संस्कृत श्लोकों में निहित, आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं, जो व्यक्तिगत चरित्र, पारिवारिक सामंजस्य, सामाजिक सद्भाव और प्रभावी शासन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह महाकाव्य न केवल अतीत की एक खिड़की है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक शाश्वत प्रेरणा है।

सन्दर्भ सूची :

1. रामायण अयोध्याकाण्ड, 109 सर्ग.13 श्लोक
2. महाभारत शान्तिपर्व 226.12
3. ऋग्वेद 10.191.2
4. कल्याण मन्त्र
5. ऋग्वेद-10-90-12
6. मनुस्मृति, अध्याय 1, श्लोक 31
7. श्रीमद्भगवद्गीता 4.13
8. रामायण, अरण्यकाण्ड, 10 सर्ग.17 श्लोक
9. रामायण, उत्तरकाण्ड, 78 सर्ग, 2 श्लोक
10. रामायण, उत्तरकाण्ड, 78 सर्ग, 3-4 श्लोक
11. रामायण, अयोध्याकाण्ड, 109सर्ग.17 श्लोक
12. रामायण, सुन्दरकाण्ड,37सर्ग.13 श्लोक
13. मनुस्मृति 7.20
14. मनुस्मृति 7.22
15. मनुस्मृति 7.25
16. रामायण, अयोध्याकाण्ड 3 सर्ग, 35 श्लोक
17. मनुस्मृति 6.92
18. श्रीमद्भगवद्गीता,अध्याय 3.35
19. रामायण, बालकाण्ड,2सर्ग.15 श्लोक
20. रामायण, अयोध्याकाण्ड ,112 सर्ग, 16 श्लोक

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अमित कुमार, (2019), रामायण की ऐतिहासिक विश्व व्यापकता, International Journal of History; 1(1): 19-21.
2. Dr. Pragya, (2020), मानवीय-सभ्यता का आदर्शः रामायण, International Journal of Sanskrit Research; 6(6): 137-140.
3. नागेन्द्र उपाध्याय,(2024), वाल्मीकीय रामायण की सामाजिक समरसता, International Journal of Scientific Research in Science and Technology, IJSRST | Volume VI | Issue II | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X.

4. Piyush Patel, Dharmik Chauhan, (2025). Exploring Human Values in the Epic Ramayana. Journal of General Education and Humanities, 4 (2), 287-296.
5. Prof. (Dr.) Ram Krishna Mandal, (2024) Relevance of Ramayana in our Daily Lives in the Context of the Present Situation, British Journal of Multidisciplinary and Advanced Studies 5 (6),1-9, Arts, Humanities and Social Sciences Print ISSN: 2517-276X.
6. भूपेन्द्र प्रताप सिंह, (2017), उत्तररामचरित में द्रष्टव्य सामाजिक तत्त्व, IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X.
7. अनु0 परमहंस जगदीश्वरानन्द सरस्वती, (1994), श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली.
8. शान्तिकुमार नानूराम व्यास, (2001), रामायण कालीन संस्कृति, सस्ता साहित्य मण्डन प्रकाशनकनाट सर्कस, नई दिल्ली.
9. शान्ति कुमार नानूराम व्यास, (1976), रामायणकालीन समाज, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली.

•